ओमशांति। अब बाप बैठ बच्चों से पूछते हैं– बच्चे, बेहद के बाप को अच्छी रीति जाना है? पूछना पड़ता है, नहीं तो पूछने का कायदा नहीं है; क्योंकि सभी जानते हैं कि हमारे यह वह ही मात–पिता हैं। मात–पिता मिला तो हो गया आस्तिक। मात–पिता, जिससे सुख घनेरे मिलते हैं, जान गए हैं। आगे बाप को नहीं जानते थे तो नास्तिक, ऑरफन थे। तुम ही पहले नम्बर में आए आस्तिक बनते हो। सतयुग में तो है ही प्रालब्ध। इस बाप का बनने से फिर आस्तिक व नास्तिक का सवाल ही नहीं उठता। आस्तिक–नास्तिक, जानना, न जानना– यह इस संगम समय पर ही होता है। बच्चे अब जानते हैं, जो कल नास्तिक थे, बाप और बाप की रचना को नहीं जानते थे, अब हमने बाप को, अपनी 84 जन्मों–2 को जाना है। कल नहीं जानते थे, आज जानते हैं। कल और आज कहा जाता है। आज पुरानी दुनिया है, कल नई होगी। आज रात है, कल दिन होगा। वास्तव में, भारतवासियों को तो अपने बाप को जानना चाहिए। भारत में ही सोमनाथ, शिव के मंदिर हैं। शिव जयन्ती मनाई जाती है; परन्तु यह कोई नहीं जानते– शिवबाबा कब आया था; सोमनाथ, जो नाम पड़ा है, सो कब आकर ज्ञान अमृत पिलाया था। अब तुम बच्चे जानते हो, हम बाबा द्वारा आस्तिक बने हैं। बाप बच्चे पैदा न करे तो बच्चे कैसे जाने! बाप ने अपना परिचय बैठ दिया है। बनी–बनाई ड्रामा अनुसार परिचय मिलता भी है संगम पर। बच्चे जानते हैं– आज नर्क है, कल स्वर्ग होगा। कल माना दूसरा जन्म हमारा सतयुग में होगा। हम पुरुषार्थ कर रहे हैं। आज है मृत्युलोक, कल अमरलोक होगा। दुनिया बदल रही है। कलहयुग से सतयुग बन रहा है। सो तो बाप ही बनावेगा। बाप ही पतित–पावन है। दुनिया में संगम का कोई को पता नहीं है। तुम अब कितनी रोशनी में आए हुए हो। तुमने अब भक्तिमार्ग छोड़ दिया है। आज भक्ति है, कल भक्त नहीं होंगे। ऐसे नहीं, आज भक्त है, कल फिर ज्ञान होगा। नहीं, भक्ति तो आधा कल्प चलती है। ज्ञान एक ही बार मिलता है और सद्गति हो जाती है। बाप एक बार ही आए सबकी सद्गति करते हैं; इसलिए गाया हुआ है– पतित–पावन सद्गति दाता। उनका जन्म भी भारत में होता है; परन्तु भारतवासी जानते नहीं हैं। शिवबाबा का निराकारी मंदिर है। कहाँ तो ज्योत का भी मंदिर है। ब्रह्मसमाजी ज्योत जगाते हैं, समझते हैं– प०पि०प० ज्योति रूप है। अनेक प्रकार की मत है। जिसने जो बात समझाई उनको मान फॉलो करते गए। अभी तुम रचता–रचना को जान गए हो। रचता ही रचना के आदि–मध्य–अंत का राज़ समझावेंगे। प०पि०प० सत् है, चैतन्य है, ज्ञान का सागर है। हर एक एक्टर की महिमा अलग–2 होती है। परमात्मा सर्वव्यापी कहने से अलग–2 महिमा हो न सके। हर एक आत्मा में अपना–2 पार्ट भरा हुआ है। सर्वव्यापी है तो प०पि०प० का पार्ट सबके अंदर बजे। कितना अंधियारा है! यह बाप बैठ समझाते हैं। बच्चे जानते हैं, बरोबर ऊँच ते ऊँच पार्ट है बाप का। उस एक को ही सब भक्त याद करते हैं। भक्त सब पतित हैं। पतित किसको कहा जाता है, यह मनुष्य मात्र नहीं जानते। सन्यासी कुछ जानते हैं। समझते हैं, इन विकारों से हम नर्कवासी बनते हैं। नारी नर्क का द्वार है, इनके साथ भोग करने से मनुष्य नर्कवासी बनते हैं; इसलिए हम घरबार छोड़ने से जाकर ब्रह्म में लीन हो जावेंगे। स्त्री की निंदा करते हैं कि यह स्त्री सर्पिणी हैं, नर्क का द्वार हैं। बाप समझाते हैं– यह है ही कलहयुग। सब विषय सागर में गोता खाते हैं। इसको वैश्यालय कहा जाता है। मैं शिवालय बनाता हूँ। तुम देवी–देवता हैं, फिर डेविल बन गए हो। सतयुग में बरोबर एक धर्म था। वह ही देवताएँ 84 जन्म भोगने से अब अपन को देवी–देवता नहीं कहलाते; क्योंकि पतित, नर्कवासी बन गए हैं। जो पूज्य स्वर्गवासी थे, वह गिरते–2, देवता,क्षत्रिय,वैश्य,शूद्र वर्ण फिरते–2, पतित पुजारी बने हैं। सबसे जास्ती भारत पावन था। वही अब पतित बना है। इसमें सभी पतित हैं। सन्यासियों को भी पावन नहीं कह सकते; क्योंकि पतित दुनिया में बैठे हैं। कलहयुग तो है न! घर–बार छोड़ कोई सतयुग में तो नहीं जाते हैं। तुमको

तो इस दुनिया को भूल स्वर्ग में जाना है। स्वर्ग के लिए हूबहू कल्प पहले मुआफिक पुरुषार्थ कर(के) भारत ही पूज्य से पुजारी बना है। फिर पूज्य बनेंगे। यह नॉलेज समझेंगे वह जो सिकीलधे होंगे। देवता धर्म वाला न होगा तो बुद्धि में नहीं बैठेंगे। यह भी बच्चे समझ गए हैं, भारतवासी ही 84 जन्म भोगते हैं। और कोई धर्म वाले 84 जन्म नहीं ले सकते। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। सब इकट्ठे तो नहीं आवेंगे। बच्चों को चक्कर का भी राज़ बताया है– सिजरा कैसे बनता है। विनोकाजीलटरी होता है न! आत्माओं का भी ऐसे कहेंगे। इनको फिर रूहानी कहेंगे। बच्चे समझते हैं वहाँ ब्रह्माण्ड में हम रहते हैं। पहले नम्बर में है शिवबाबा, फिर ब्रह्मा,विष्णु,शंकर, फिर ल०ना० और इनका घराणा। नम्बरवार तो हैं न! तुम बच्चों की बुद्धि में यह सारा झाड़ बैठा हुआ है। वहाँ यह ज्ञान नहीं रहता– कौन–2 आवेंगे, क्या होगा; परन्तु वहाँ अज्ञानी भी नहीं कहेंगे। वह है प्रालब्ध, जो इस ज्ञान से तुम पाते हो। अभी है चढ़ने की, पीछे ही(है) गिरने की बात। 1250 वर्ष में दो कला कम हो जाती है। थोड़े–2 होकर गिरते हैं। अब तुम 84 जन्म के चक्कर को जान गए हो। तुम सबका हिसाब निकाल सकते हो। पहले है थुड़(थुर), फिर उनसे ती(न) फाउंडेन निकलते हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में अच्छी तरह बैठा हुआ है। बीच और झाड़ को जानना बहुत सहज है। अभी तुम नास्तिक से आस्तिक ब(ने) हो बाप द्वारा। बाबा ने समझाया है– फादर शोज़ सन, टीचर शोज़ स्टूडेंट। पहले गुरु शोज़ फॉलोअर्स, फिर फॉलोअर्स शोज़ गुरु। यहाँ तो तीनों ही एक बाप है। वह है रचता। ज़रूर नई दुनिया रचेंगे। स्वर्ग में ल०ना० राज्य करते थे। उन्होंने वह वर्सा कहाँ से लिया? किसने ऐसा कर्म सिखलाय जो इतना ऊँच पद पाया? अभी बाप कहते हैं, तुमको ऐसे कर्म सिखलाता हूँ जो तुम सो देवी–देवता बनेंगे। स्वर्ग में बहुत मालामाल थे। बाप से ही वर्सा लिया था। ज़रूर बाप आया था। भारत को ही स्वर्ग बनाया होगा। तो बाप समझाते हैं– चलते–फिरते ऐसे–2 विचार–सागर–मंथन करो। यह बुद्धि के लिए फूड दे रहे हैं। हमारी बुद्धि में है भारत नया था, देवी–देवताओं का राज्य था। फिर उन्हों को पुनर्जन्म लिए 84 जन्म ज़रूर लेना है। वह भी हिसाब बताते हैं। यह गोला बहुत बड़ा–2 होना चाहिए। चक्कर पर किसको समझाना अच्छा होगा। मनुष्य तो बिल्कुल बुद्धिहीन, अंधे हैं। विचार करना चाहिए, मनुष्यों को कैसे समझावें। लगा हुआ है– अब है संगम, दुनिया बदल रही है। यहाँ है अनेक धर्म, वहाँ है एक धर्म, जो बाबा ने स्थापन किया। भारत का प्राचीन राजयोग मशहूर है। तुम जानते हो, फिर से राजयोग सीख रहे हैं, भगवान सिखलाए रहे हैं। यह है बेहद की हिस्ट्री–जॉग्राफी। भगवान ही बेहद की हिस्ट्री–जॉग्राफी बतावेंगे। मनुष्य, मनुष्य को बताय न सके। यह बाबा कहते हैं– मैं कुछ भी नहीं जानता था। गीता पढ़ते थे, समझते कुछ भी नहीं थे। यह कोई अपनी महिमा नहीं करते हैं– मैं ऐसा हूँ, वैसा हूँ। बाप कहते हैं, इन गुरु–गोसाई आदि सबको छोड़ो। भक्तिमार्ग के कर्मकाण्ड मत करो। अब भक्तिमार्ग पूरा होना है। भक्ति मूर्दाबाद, ज्ञान जिंदाबाद। जब ज्ञान जिंदाबाद होगा तो भक्ति मुर्दाबाद होगी। रात के बाद दिन आवेगा। तुम हो अभी संगम पर। संगम पर ही यह नॉलेज मिलती है– बाप कैसे पहले सूक्ष्मवतन की रचना करते हैं। फिर यह प्रजापिता ब्रह्मा, इनका है मनुष्य सृष्टि का सिजरा, जिसके लिए गाते हैं– आदि देव, आदि देवी, एडम–ईव थे। मात–पिता न हो तो सृष्टि कैसे रची जावे! एडम को आदि देव ब्रह्मा कहेंगे; परन्तु वह क्रियेटर नहीं है। ऐसे नहीं समझते, प०पि०प० ने एडम द्वारा कराया। ज़रूर गॉड ही स्वर्ग का रचता है। वह है निराकार। बाबा भी निराकार, हम आत्माएँ भी निराकार। हम यह शरीर लेकर पुनर्जन्म में आते हैं पार्ट बजाने। उस निराकार बाप को भक्तिमार्ग में भी याद करते हैं। वह रहते ही हैं परमधाम में। वह है पतित–पावन। पतित दुनिया से पावन दुनिया में ले जाते हैं। पावन बनाने लिए बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं; इसलिए बाप भी है तो टीचर भी है। टीचर जो कि हिस्ट्री–जॉग्राफी सिखलाते हैं न! यह बेहद की हिस्ट्री, बेहद का बाप सिखाते

हैं। सतयुग में सूर्यवंशी डिनायस्टी थी, विश्व के मालिक थे। अभी तुम जैसे मास्टर नॉलेजफुल बने हो। तो अच्छी रीति पढ़ना पड़े। बाप कहते हैं– बच्चे, याद रखना, पवित्र न रहेंगे तो भल कितना भी सुनेंगे, एक कान से सुना दूसरे से बह जावेगा। फिर सुना, न सुना रह जावेगा। असंख चोर हराम खोर कहा जाता है न। सन्यासियों को तो घृणा आती है। फट से छोड़कर भागते हैं। बाप कहते हैं– भागने की कोई बात नहीं। तुम श्रीमत पर चलो, पवित्रता की प्रतिज्ञा करो, नहीं तो पापों का बोझा जो है कटेगा नहीं। पावन न बनते हो तो और ही ज़ोर से गिरते हो। बाप कहते हैं– याद रखना, अब पावन न बने तो फिर बहुत सज़ा खानी पड़ेगी। अज्ञान काल में इतनी सज़ा न मिलती है। मेरे पास आए प्रतिज्ञा कर फिर पवित्र न बने और छुपकर इंद्र सभा में आते रहेंगे, तो बाप कहते हैं– बड़ा दण्ड खाना पड़ेगा, और ही पत्थरबुद्धि बन पड़ेंगे; नहीं तो पैर न रखो। अच्छी रीति समझकर प्रतिज्ञा करो, नहीं तो सज़ा बहुत है। फिर साधारण प्रजा में चले जावेंगे। मर्तबा तो नम्बरवार है न! ऊँच ते ऊँच भी बनते, फिर नीच ते नीच भी बनते हैं। सिर्फ वहाँ दुःख नहीं होता है। यहाँ तो छोटे–बड़े सबको दुःख ही दुःख है। अचानक ही बैठकर जाते हैं। इसको कहा जाता अकाले मृत्यु। वास्तव में, काल होना चाहिए जब आयु पूरी हो। बरोबर भारत में कायदे सिर आयु पूरी होती थी। बूढ़े होते थे तो पहले ही से साक्षात्कार होता था– अब फिर बच्चा बनेंगे। आत्मा समझती है, अब यह बूढ़ा शरीर छोड़ बच्चा बनना है। यहाँ तुम जानते हो, शरीर छोड़कर बाप के पास जावेंगे। यह पुराना शरीर है। यह उतारना है। 84 जन्म लेते, तमोप्रधान शरीर हो गया है। अब हम जाते हैं बाबा के पास। घड़ी–2 बाप को ही याद करना है। बाबा, अब बस हम आए कि आए। योगबल से आत्मा को प्युअर बनाते हैं। बस, इसके लिए एक ही उपाय है बाप से योग लगाना; फिर तुम प्युअर, सतोप्रधान बन जावेंगे। योग लगाते–2 अंत में योग सिद्ध होना चाहिए। बाप कहते हैं– यह मेरा रथ है। लैण्ड लेडी कहो या लॉर्ड कहो– यह बड़ा विचित्र है। कैसे शिवबाबा आते हैं! कहते हैं– यह लैण्ड लेडी भी है, प्रजापिता भी है। मुझ निराकार को शरीर तो ज़रूर चाहिए। हर एक को अपना–2 रथ है। मैं कैसे रथी बनूँ? मुझे तो आना पड़ता है पतित दुनिया में। कृष्ण तो पावन था। ड्रामा में एक ही रथ मुकर्रर है, दो हो नहीं सकते। समझाते हैं यह मेरा रथ है। मैं आता भी हूँ भारत में। ऐसे नहीं, एक कल्प भारत में, दूसरे में जर्मनी में आऊँगा। बाप बैठ समझाते हैं– बच्चे, दिन में तो तुम कर्मयोगी हो। कर्म करना पड़ता है। आगे पुरुष कमाते थे, माताएँ घर सम्भालती थीं। आगे माताएँ इतना पढ़ती नहीं थीं। यह तो अभी पढ़ाई शुरू हुई है; क्योंकि भिखारी बन पड़े हैं। स्त्रियाँ भी धंधा–धोरी करती हैं। अब तुम बच्चों को अविनाशी कमाई करनी है। हर एक को बेहद बाप से वर्सा लेना है। जो करेंगे सो अपना पद पावेंगे। इस पढ़ाई का फल 21 जन्म मिलता है। यह पढ़ाई बाप बिगर कोई पढ़ा न सके। पतित–पावन भी वह गॉड फादर है। वह ही राजयोग सिखलाते हैं। तुम जानते हो, हम बाप से स्वर्ग के लायक बनते हैं। 84 जन्म पूरे हुए, अब घर जाते हैं। यह याद रहने से भी तुम बहुत प्रफुल्लित रहेंगे। बाबा अपना अनुभव बताते हैं। कोशिश करते हैं याद रखने की; परन्तु भूल जाते हैं। बाबा कहते हैं– बच्चे, रात को जागो, प्रैक्टिस करो, फिर वह अवस्था स्थायी हो जावेगी; इसलिए कहा जाता है– हे नींद के जीतने वाले बच्चों! कमाई करो। हाथ, पाँव व मुख से तो कुछ करना व बोलना नहीं है। आगे तो माला फेरते थे, राम–2 जपते थे। माला का राज़ भी अब समझते हैं– रुद्रमाला और विजयमाला। अभी तक पुरुषार्थी हैं। इसकी माला नहीं कहेंगे। तो रात को जागने से तुमको बहुत मज़ा आवेगा; सब सो जाते हैं। गंदगी रात को (9)–12 बजे तक होती। वह हुआ गंदे से गंदा गँवाने का टाइम। 2 बजे से है फिर अमृतवेला। बीच में 1 घण्टा गंदगी को निकलने दो। इतना सुनते हुए भी फिर काम–कटारी चलाते रहेंगे तो बुद्धि का

ताला बन्द हो जावेगा। फिर किसको समझाए न सकेंगे। वृंदावन में रास लीला का बना हुआ है। वास्तव में, है यह ज्ञान की डांस। ज्ञान सुनकर फिर जाकर उल्टा बोलते थे तो उनका गला घूट जाता है। पूरा समझते न हैं तो बाहर जाकर उल्टा–सुल्टा बोलते हैं। बाबा जानते हैं, बहुत ही ट्रेटर बनने वाले हैं। आश्चर्यवत् पश्यन्ति, कथन्ति, बाप का बनन्ति, फिर इनसे भी कोई–2 ट्रेटर बनती। फिर उनके घट घूट जाते हैं। ज्ञान का अक्षर बोल न सके। माया एकदम गॉडरेज का ताला बुद्धि को लगा देती है। कहा भी जाता है– शेर का दूध सो(ने) के बर्तन में ठहर सके। अभी तुम शेरनियाँ बनी हो। योग से तुम्हारी आत्मा प्युअर होती जाती है। योग से धारणा होगी। योग नहीं तो फिर बर्तन आयरन एज हो जाते हैं। बातें तो बहुत समझाते हैं। चलते–फिरते समझो, हम गॉड फादरली स्टूडेंट (हैं)। प०पि०प० हमको भविष्य का वर्सा देने, हमको राजयोग सिखलाय रहे हैं। यह भूलना न चाहिए, मेहनत करनी है। अपन को गॉड फादरली स्टूडेंट ज़रूर समझो। स्टूडेंट्स को जो सिखलाया जाता है वह बुद्धि में रहता है। आत्मा को सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का नॉलेज हुआ है। नॉलेज दी है बाबा ने। वह बाप,टीचर,सद्गुरु है। बाबा हमको योग सिखलाते हैं वापस ले चलने लिए– यह क्यों भूलना चाहिए! याद रहने से सदैव खुशी में हर्षित रहेंगे। भूलने से ज़रा बेहोशी आ जाती है। तुम्हारी अब आँखें खुल गई हैं। बस, अब तो शान्तिधाम, सुखधाम जाना है। बिल्कुल सहज है। तुम बच्चे जानते हो, बेहद के बाप से बहुत ऊँच पढ़ाई पढ़ रहे हैं, जिससे 21 जन्म सदा सुखी रहेंगे, राजाई पद पावेंगे। एक ही टीचर के इतने स्टूडेंट्स हो गए। एक ही सद्गुरु के इतने फॉलोअर्स। वह सद्गुरु है निराकार। उसको याद करना है, फॉलो करना है। जाना तो सबको है, कोई बैठने वाला न है। हम साजन के साथ पलो–पली बाँध कर जावेंगे। बड़ा विचित्र, अनोखा साजन है! आत्मा भी अनोखी है। आत्मा की ज्योत जगी हुई होगी तो जगाने वाले के पीछे भागेंगे। कन्या की जब शादी होती है तो मटकी कन्या के सिर पर रखते हैं। साजन के सिर पर नहीं, सजनी पर रखते हैं। बाबा कलश भी सजनियों पर रखते हैं। आत्माओं–सजनियों की ज्योत जगती है तो सब साजन के पिछाड़ी भागती हैं। तुम बच्चों के अन्दर बहुत खुशी रहनी चाहिए। वह बाजोली खेलने में सेकेण्ड लगता है। यह नॉलेज सृष्टि के आदि–मध्य–अंत की भी सेकेण्ड की है। चोटी और पैर, पहले माथा रख ऐसे चक्कर लगाते हैं, बाजोली खेलते हैं। हमारी भी बाजोली है। सिर्फ बाजोली याद रहे, इसमें ही सारी सृष्टि के चक्कर का ज्ञान आ जाता है। कितनी युक्ति बतलाते हैं! फिर भी कहते हैं– बाबा, कोई युक्ति बताओ। बस, याद करो और कराओ। बहुत प्यार से भूँ–भूँ करनी है। तुम हो भ्रमरियाँ, जो कीड़ों को आप समान बनाती हो। जनावर की तो बात नहीं। तुम्हारी आत्मा पवित्र होने से स्वर्ग की परी बन जाती हो। कमाल है! अच्छा, मीठे–2, सिकीलधे 84 जन्म बाद फिर आकर मिले हो। आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल। तुम जानते हो, 5000 वर्ष का चक्कर पूरा हुआ, अब हम जाते हैं। एक ही बाप को याद करते हैं; क्योंकि वहाँ जाना है। सन्यासी घर–बार छोड़ भाग जाते हैं। यहाँ तुमको योगबल से बंधन चुक्तू करना है। यह है बेहद का सन्यास। अच्छा, सिकीलधे बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग। बाप कहते हैं– मैं तुम बच्चों को लेने आया हूँ। साजन लेने जाते हैं न! भगवान को भी आना ही पड़ता है। आय कर पढ़ाते हैं, क्या बनाने? भगवान–भगवती। बच्चों को दिल में आना चाहिए– हम भगवती ल०, भगवान ना० बन रहे हैं; परन्तु वहाँ कहेंगे– देवी–देवता। गाया भी हुआ है– मनुष्य से देवता किए करत न लागे वार। इसलिए देवी–देवता ही कहना चाहिए। भगवान आए बच्चों को पढ़ाय, विश्व का मालिक, देवता बनाते हैं। चलते–फिरते यह अभ्यास करना है। इसी में ही कमाई है। ॐ